VOL- IX | ISSUE- II | FEBRUARY | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

स्वतन्त्रता आन्दोलन में भारतेन्दुयुगीन साहित्यकारों का योगदान

पार्वती,
ईमेल : parvati9@gmail.com

शोध सार :–

लेखनी प्रत्येक कालखण्ड में हमारे समाज का मार्गदर्शन करती आई है। जब–जब हमारा समाज दिग्भ्रमित होता है, राजनीति पथभ्रष्ट होती है और जन साधारण अपने कर्त्तव्य से विमुख होता है तो हमारे लेखनी के सिपाही उठकर उनका मार्गदर्शन करते हैं। भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन भी इसका अपवाद नहीं है। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पहले जब देश में अंग्रेजों का राज्य था, उस समय चारों तरफ अंधकार ही अंधकार छाया हुआ था। न तो देश के राजाओं में इतना सामर्थ्य था कि वो अंग्रेजी राज का विरोध कर सकें और न ही कोई राष्ट्रवादी नेता ही थे जो देश की जनता का मनोबल बढ़ा सके तब हमारे देश में अनेक ऐसे साहित्यकार हुए जिन्होंने अपनी लेखनी के द्वारा जनता का आत्मबल और मनोबल बढ़ाने के लिए प्रयास किया। उन साहित्यकारों ने तत्कालीन समाज में चेतना के ऐसे बीज बोए जिससे प्रेरित होकर समाज का प्रत्येक वर्ग इस स्वतन्त्रता आन्दोलन में खड़ा हो गया। भारतेन्दु पूर्व कविता का केन्द्र राज–दरबार, राजा और उसकी विलासिता तक ही सीमित रहा, जिस कारण यह काव्य जनसाधारण की अपेक्षा राजमहलों तक ही सिमट कर रह गया। अंग्रेजों के आगमन तथा उनके शोषण और अत्याचार का जनजीवन पर अत्यधिक बुरा प्रभाव पड़ा। परिणामतः देश में राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और नवजागरण के अंकुर चारों ओर प्रस्फुटित होने लगे। यदि हम भारतेन्दु और उनके साहित्य तथा उस साहित्य को सामने लाने वाली मानसिकता पर निगाह डालें तो यह स्पष्ट होगा कि भारतेन्दु युग सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक धरातल पर एक क्रान्ति का युग था जिसमें इस युग के साहित्यकारों ने जनसाधारण को जागृत कर एक नये युग का पुर्ननिर्माण करने की दिशा में कदम बढ़ाया। परन्तु यह कार्य उनके लिए आसान न था। एक तरफ तो शताब्दियों के सामंती संस्कार, सदियों से पोषित मध्ययुगीन मानसिकता और गहरी कूटनीति तथा दूसरी ओर अंग्रेजों की दबाबपूर्ण नीतियों, दमनकारी कानून–व्यवस्था और साम्राज्यवादी शासन व्यवस्था ने भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति के मार्ग को और भी दुष्कर बना दिया था। भारतेन्दुयुगीन साहित्यकारों ने मध्ययुगीन सामंती मानसिकता का विरोध करते हुए जन साधारण से सहानुभूति रखते हुए रूढ़िवादी स्वरों का विरोध किया तथा भारतीय संस्कृति को प्रगतिशील यथार्थ की ओर उन्मुख करते हुए देश को एक नई चेतना प्रदान की। उस युग की कविता का प्रमुख स्वर देशभक्ति, लोकहित, समाज सुधार, धर्म सुधार और अपनी मातृभाषा का उद्धार करना था जिसका आश्रय लेकर जनसाधारण की सुप्त स्वातन्त्रय भावनाओं तथा आत्मशक्ति को जागृत करने का प्रयास किया गया। भारतेन्दु युगीन कवियों ने आदिकाल के वीरकाव्य की प्रवृति को लेते हुए अपनी प्राचीन संस्कृति का गौरवगान किया तथा साम्राज्यवाद के प्रति आक्रोश प्रकट करते हुए अंग्रेजों द्वारा किये जाने वाले आर्थिक शोषण का विरोध किया और देश प्रेम की भावना व्यक्त की। अतीत से प्रेरणा लेकर वर्तमान को सशक्त बनाना भारतेन्दुयुगीन कवियों की प्रमुख विशेषता रही है तथा इसी का आधार बनाकर इन कवियों ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। अंग्रेजों ने भारत में अपने शासन की शुरूआत करने के लिए पहले तो भारत को लूटा, फिर सिंचाई और निर्माण के कार्यों की उपेक्षा की तथा इग्लैंड का समूचा फौजदार कानून ही यहाँ पर लागू कर दिया। भारतीय माल को बाहर देशों में जाने से रोका जिसका प्रभाव भारतीय अर्थव्यवस्था पर कहर की तरह पड़ा। अंग्रेजों के जाल में फंसकर भारतीयों की दशा अत्यंत दयनीय हो गई थी। आर्थिक शोषण, टैक्स, मंहगाई, अकाल, महामारी आदि के कारण भारतीयों का जीवन नरक के समान हो गया। ऐसी दशा में भारतेन्दुयुगीन साहित्यकारों ने देश की दुर्दशा के प्रत्येक पक्ष पर अपनी लेखनी चलाई जिसमें उन्होंने अपनी दूरदृष्टि का परिचय देते हुए अपनी कविताओं के माध्यम से देश की स्थिति का वर्णन किया और ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति विद्रोह का स्वर गुंजित किया।

कठिन शब्द :– जनसाधारण, स्वाधीनता, सहानुभूति, यथासम्भव, रूढ़िवादी

परिचय :–

स्वतन्त्रता आन्दोलन भारतीय इतिहास का वह युग है जो परतन्त्रता, पीड़ा, दंभ, कड़वाहट, आत्मसम्मान, गर्व, गौरव और शहीदों के लहू को समेटे हुए है। स्वतन्त्रता आन्दोलन के इस महायज्ञ में प्रत्येक वर्ग ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारतेन्दु और भारतेन्दु मण्डल के साहित्यकारों ने युग चेतना को गद्य और पद्य दोनों रूपों में ही अभिव्यक्ति प्रदान की, साथ ही इन साहित्यकारों ने स्वाधीनता संग्राम और स्वतन्त्रता सेनानियों की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए भारत के स्वर्णिम अतीत में लोगों की आस्था जगाने का प्रयास किया तथा अंग्रेजों की शोषणकारी नीतियों का भी विरोध किया। भारतेन्दु ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में

महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अंग्रेजों के जुल्म और लूट–खसोट का बढ़–चढ़कर विरोध किया तथा अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के खिलाफ पूरे भारत को खड़ा किया। भारतेन्दु ने अपनी रचनाओं के माध्यम से देश की सोई हुई जनता को जगाने का प्रयास किया और भारत की बदहाली को अपने शब्दों में बयां किया। 'अंधरे नगरी' नामक मौलक नाटक में उन्होंने देश के तत्कालीन राजाओं की निरंकुशता, अंधेरगर्दी और उनकी मूढ़ता का सटीक वर्णन व्यंगपूर्ण शैली में करने के साथ ही इस अंधेरगर्दी को खत्म करने के लिए भारतीय जनता की प्रबल इच्छा भी प्रकट की है। इस युग की रचनाओं में देश और जनता की भावनाओं को पहली बार अभिव्यक्ति मिली है तथा कवियों और लेखकों ने सांस्कृतिक गौरव का चित्र प्रस्तुत करके लोगों में आत्म–सम्मान की भावना भरने का प्रयास किया। भारतेन्दु युग में काव्य की भाषा तो ब्रजभाषा ही रही, यद्यपि खड़ी बोली में भी छुट–पुट प्रयत्न हुए परन्तु वे नगण्य ही थे। भारतेन्दु युग के अधिकांश लेखक कवि होने के साथ–साथ पत्रकार भी थे। बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमधन'–आनंद कादम्बिनी (मिर्जापुर), बालकृष्ण भट्ट– हिन्दी प्रदीप (प्रयाग), प्रतापनारायण मिश्र–ब्राह्मण (कानपुर), तोता राम– भारत बंधु (अलीगढ़) आदि प्रमुख हैं। भारतेन्दु ने भी 'कवि वचन सुधा' १८६८ ई. में, 'हरिशचन्द्र मैग्ज़ीन' १८७३ ई. में तथा नारी शिक्षा के लिए १८७४ ई. में 'बाल बोधिनी' जैसी पत्रिकाओं का संपादन किया। भारतेन्दु युग में अन्य अनेक कवि/लेखक हुए जिन्होंने देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति में जनसामान्य की भागीदारी का महत्व समझा और उन्हें अपनी लेखनी द्वारा देश के स्वाधीनता–संग्राम का हिस्सा बनाने का भरसक प्रयास किया।

विश्लेषण :– हिन्दी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल के प्रथम चरण को भारतेन्दु युग के नाम से जाना जाता है। भारतेन्दु युग आधुनिकता का प्रवेश द्वार माना जाता है। भारतेन्दु आधुनिक युग के प्रतिनिधि कवि/लेखक के रूप में हमारे सामने आते हैं तथा ये हिन्दी में आधुनिकता और पुनर्जागरण के प्रवर्तक माने जाते हैं। डॉ. नगेन्द्र ने भारतेन्दु युग को पुनर्जागरण काल की संज्ञा दी है। भारतेन्दु ने कविता को रीतिकालीन दरबारी परिवेश से बाहर निकाल कर उसका नाता साधारण जनता से जोड़ा और उसे श्रृंगारमुक्त करके देशभक्ति के रंग में रंगा। भारतेन्दु युगीन साहित्यकारों ने अपनी विभिन्न विधाओं के माध्यम से देशवासियों को तत्कालीन परिस्थितियों से अवगत करवाया और उनमें राष्ट्रीय भावना का संचार किया। इन सभी साहित्यिक विधाओं में नाटक का सबसे महत्वपूर्ण स्थान रहा है जिसे भरतमुनि ने 'पंचम वेद' कहा है। नाटक दृश्य काव्य होने के कारण अशिक्षित और निरक्षर जनता द्वारा अच्छी तरह से आत्मसात किया जा सकता है, यही कारण है कि भारतेन्दु युग में नाटक लिखने की प्रवृति ज्यादा पायी जाती है। ''नाटक से बढ़कर ऐसा कोई दूसरा उपाय नहीं था जिससे सर्वसाधारण की सामाजिक दशा का वर्तमान चित्र दिखाकर उसका पूरा–पूरा सुधार किया जाए।''[१] इस युग के लेखकों ने देश के प्राचीन गौरव का गुणगान करके भारतीय जनता को उत्साहित एवं आह्लादित किया। इन लेखकों ने कहीं प्रतीकों का सहारा लेकर देशप्रेम की अलख जगाई तो कहीं भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के साथ ज्ञान–विज्ञान का समन्वय करके राष्ट्रीय चेतना की भावना जागृत की। भारत की दीन–हीन दशा देखकर प्राचीन भारत की गौरवपूर्ण स्मृतियों के साथ अपने पूर्वजों की याद आ जाना स्वाभाविक ही था। राधा कृष्ण दास ने भी अपने उन्हीं महापुरूषों के जीवन से प्रेरणा लेकर देश की जनता को जागृत कर राष्ट्र उत्थान और मुक्ति की कामना की है–

''कहां परीक्षित कहं जनमेजय कहं विक्रम कहं भोज,
नंद वंश कहं चन्द्रगुप्त कहं, हाय कहां वह ओज।
हा कबहूँ वह दिन फिर ह्वै हैं, वह समृद्धि व शोभा,
कै अब तरसि–तरसि मसूसि कै दिन जैहें सब छोभा।''[२]

उस समय देश पर अंग्रेजों का राज था जिस कारण परिस्थितियाँ हमारे अनुकूल न होने के कारण कवियों/लेखकों का ध्यान हमारे गौरवशाली अतीत की तरफ गया तथा उन्होंने अतीत की गौरव गाथाओं और पूर्वजों के अलौकिक कीर्तिमान द्वारा राष्ट्र में नव जागृति लाने का प्रयास किया।

''जो भारत जग में रह्यो सब सो उत्तम देस,
तहि भारत में अब नहिं सुख को लेस।''[३]

सन् १८०० ई॰ से १९०० ई॰ के बीच देश को अनेक प्राकृतिक आपदाएं सहन करनी पड़ी। अकाल, महामारी, जैसी विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई जिसमें लाखों निर्दोष लोग मारे गए, परन्तु ब्रिटिश सरकार ने देश की जनता के लिए कुछ भी नहीं किया। ऐसे में

भारतेन्दु युगीन साहित्यकारों ने इस संकट से बचाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

''तिरपन को साल भारी अनावृष्टि देशपारी सब नर नारी भयो निपट दुखारी,
कहीं अन्न कष्ट डारी कहीं फैली महामारी संकट प्रचारीजन पीड़ित अपारी है।
विपति बिदारी बेगिनाथ सुखकारी सुनो मंगल प्रसाद बार–बार बलिहारी हैं।
अवध बिहारी सुधि लीजिये हमारी अब परी जेर–बारी पै भरोसा मोहिभारी है।''[४]

देश की आर्थिक दुरावस्था, बढ़ती हुई मंहगाई और कर की मार के कारण देशवासी स्वयं का भविष्य अंधकार से घिरा हुआ जानने लगे थे। उस पर अपने देश का धन विदेशों की तरफ जाता देखकर उनका मन अंग्रेजी साम्राज्यवाद के प्रति व्यग्र हो उठा। ऐसे समय में भारतेन्दु युगीन साहित्यकारों ने अंग्रेजों को प्रेरणा दी। पराधीन भारत की दीन हीन अवस्था का चित्रण करने वाला सर्वप्रथम नाटक भारतेन्दु रचित 'भारत दुर्दशा' है। भारतेन्दु का यह नाटक युगीन समस्याओं को उजागर करता हुआ उसका यथासम्भव समाधान भी बताता है। इसमें लेखक ने अपने सामने प्रत्यक्ष दिखाई देने वाले लक्ष्यहीन व पतनोन्मुखी भारत का वर्णन किया है जिनको देश से प्रेम नहीं अपितु अपने आप से ही प्रेम है। परस्पर, वैमनस्य, कलह, आलस्य, महामारी, मंहगाई आदि के कारण भारतीयों में आपसी प्रेमभाव और एकता समाप्त हो चुकी है। ऐसे में देशोद्धार के बारे में सोचना उचित नहीं होगा, ''अब हिन्दुओं को खाने मात्र से काम। देश से कुछ काम नहीं। राज न रहा पेंशन ही सही, रोजगार न रहा सूद से ही सही।''[५]

इन साहित्यकारों का काम केवल देश की दुर्दशा का वर्णन करना मात्र ही नहीं था अपितु राष्ट्रप्रेम का संचार करना और गुलामी की बेड़ियों को तोड़ना भी इनका लक्ष्य था। राधाचरण गोस्वामी ने भी अपने नाटकों द्वारा तत्कालीन दुरावस्था का वर्णन करने के साथ ही देशवासियों को सजग करते हुए अपने नाटक 'अमर सिंह राठौर' में देशभक्ति से ओत–प्रोत गीत गाए हैं–

''भारत सो पराधीन हाय! हाय! हाय!
भारत सो दीन दु:खत रोवत बिलखाय।।
भारत को वेगि दास भाव से छुड़ाओ।
जय भारत, जय भारत, जय भारत, गाओ।।''[६]

भारतेन्दु युग में पत्रकारिता ने भी भारतीय जनता में देशभक्ति का संचार करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। इसके माध्यम से हिन्दी भाषा का परिष्कार हुआ और खड़ी बोली का भी व्यापक प्रचार–प्रसार हुआ। भारतेन्दु युगीन सभी लेखक प्राय: पत्रकार भी थे। उन्होंने स्वदेशी के प्रचार और ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों का विरोध अपनी पत्रकारिता के माध्यम से किया तथा देशवासियों में राष्ट्रीय चेतना जगाने का आह्वान किया। स्वदेशी को अपनाने पर जोर, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, आर्थिक विकास, आधुनिक प्रगति से अवगत कराना, सामाजिक बुराइयों को दूर करना और शिक्षा के प्रचार–प्रसार आदि विषयों को इन्होंने महत्व दिया। भारतेन्दु युगीन हिन्दी पत्रकारिता ने राष्ट्रीय विचारों से ओत–प्रोत वास्तविक जन साहित्य की सृष्टि की। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इनके बारे में लिखा है– ''आजकल के समान उनका जीवन देश के सामान्य जीवन से विच्छिन्न न था। विदेशी अन्धड़ो ने उनकी आंखों में इतनी धूल नही झोंकी थी कि अपने देश का रूप रंग उन्हें सुनाई ही नहीं पड़ता। काल की गति को वे देखते थे, सुधार के मार्ग भी उन्हें सूझते थे, पर पश्चिम की एक बात के अभिनय को ही वे उन्नति का पर्याय नहीं समझते थे। प्राचीन और नवीन के संधि स्थल पर खड़े होकर वे दोनों का जोड़ इस प्रकार मिलाना चाहते थे कि नवीन प्राचीन का प्रवर्धित रूप प्रतीत हो, न कि ऊपर से लपेटी हुई वस्तु।''[७]

इन साहित्यकारों ने देश की तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक समस्याओं को सुलझाने में हास्य, व्यंग्य और आलोचना का सहारा लेते हुए समाज में नवचेतना फैलाने का प्रयास किया। ''महाअंधेर नगरी' में देश के राजनीतिक जागरण का परिचय प्राप्त होता है.....जब भारतवासी उन पदों पर भी आरूढ़ होने का दावा कर रहे थे जो केवल अंग्रेजों के लिए निश्चित किए गए थे।''[८] साहित्य को समाज और देश की स्वतन्त्रता का हथियार बनाकर भारतेन्दु युगीन साहित्यकारों ने साहित्य की नई–नई विधाओं को जन्म देकर राष्ट्रीय एकता में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद के शब्दों में, ''हिन्दी साहित्य में यह पहला अवसर था जब कि हिन्दी के लेखकों ने साहित्य की रचना में युग भावना को इतने

समीप से देखा और उसके कठोर यथार्थ को ईमानदारी से प्रकट किया।''[९] भारतीय किसानों पर सामंतों और जमीदारों का अत्याचार बढ़ता ही जा रहा था तथा किसानों की दशा अत्यन्त शोचनीय बनती जा रही थी। समय बीतने के साथ साथ अंग्रेजों का शोषण और भी बढ़ता देखकर हमारे साहित्यकारों का हृद्य द्रवित होना स्वाभाविक ही था। ''हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जनचेतना के अग्रदूत थे। भारतेन्दु कालीन साहित्यकार एक नवीन और स्वस्थ दृष्टिकोण लेकर देश के विशाल प्रांगण में प्रविष्ट हुए। इनके प्रवेश के साथ इस युग में नयी चेतना का सूत्रपात हुआ।''[१०] इस प्रकर भारतेन्दु युगीन साहित्यकारों ने देश को स्वतन्त्रता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। अनेक इतिहासकारों, लेखकों, विचारकों आदि ने देश की जनता को जागृत करने के लिए अपनी लेखनी चलाई और अनेक बहुमूल्य ग्रन्थों द्वारा राष्ट्रीय आन्दोलन में भागीदार बने।

निष्कर्ष :— हिन्दी साहित्य के इतिहास के आरम्भिक चरण को 'भारतेन्दु युग' के नाम से जाना जाता है भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हिन्दी साहित्य में आधुनिक युग के प्रसिद्ध कवि/लेखक के रूप में हमारे सामने आते हैं और 'भारतेन्दु युग' हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल का प्रवेश द्वार माना जाता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र भारतीयों की नवोचित आकांक्षाओं और राष्ट्रीयता के प्रतीक थे। जिस समय भारतेन्दु ने हिन्दी साहित्य में पदार्पण किया, उस समय देश अंग्रेजों की गुलामी का शिकार बना हुआ था और देश की जनता को अंग्रेजों से आज़ादी पाने का भी कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा था। अंग्रेजों ने भारतीयों पर इतना अधिक अत्याचार किया कि भारतीयों को देश के बारे में विचार करने का ख्याल ही नहीं आया। ऐसे समय में भारतेन्दु ने अपनी लेखनी द्वारा भारतीय जनता की दबी हुई राष्ट्रीय भावना को जगाया और उन्हें अंग्रेजों की दासता से मुक्ति का मार्ग दिखाया। उस समय के अन्य लेखकों ने भी इस दिशा में कदम बढ़ाया और देश की जनता को स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए जागरूक किया। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में जितना योगदान भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक संगठनों, क्रान्तिकारियों, राष्ट्रवादी नेताओं, किसानों एवं मजदूरों का रहा है, उतना ही योगदान भारतेन्दु युगीन साहित्यकारों का भी रहा है। उन्होंने तत्कालीन समाज में व्यक्ति को उसकी वास्तविक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक स्थिति से अवगत करवाया और सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक सुधार की बात करके उनमें राष्ट्रीय चेतना को विकसित किया जो कि आगे चलकर राष्ट्रीय आन्दोलन का एक अपरिहार्य अंग बन गया। जब भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और उनके सहयोगियों ने साहित्य को अभिजात्य वर्ग के थोड़े से लोगों की रूचियों और मानसिकता से अलग करके बाकि सम्पूर्ण जनता से जोड़ने का प्रयास किया तो वास्तव में ही ये देश की बहुसंख्यक जनता को राष्ट्रीय आन्दोलन से जोड़ने का कार्य कर पाए और इस प्रयास ने भारतेन्दु युगीन साहित्यकारों को एक नए प्रतिमान के साथ अभिसिंचित किया।

संदर्भ :—

१. किशोरीलाल गोस्वामी, नाट्य सम्भव,प्रस्तावना,पृ॰ २
२. श्याम सुन्दर दास (सम्पादक),राधाकृष्ण ग्रन्थावली,पृ॰ ८
३. ब्रजरत्न दास (सम्पादक),भारतेन्दु ग्रन्थावली, पृ॰ ८०५
४. श्याम सुन्दर दास (सम्पादक), राधाकृष्ण दास ग्रन्थावली, पृ॰ २०
५. शिव प्रसाद मिश्र (सम्पादक), भारतेन्दु ग्रन्थावली भाग—१ (भारत दुर्दशा), पृ॰ १३९—१४०
६. राधाचरण गोस्वामी, अमर सिंह राठौर, अंक १, दृश्य १, पृ॰ १
७. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ॰ ३०८
८. विजयानन्द त्रिपाठी, महा अंधेर नगरी, पृ॰ ११—१२
९. डॉ॰ वासुदेव नंदन प्रसाद, भारतेन्दु युग का नाट्य साहित्य रंगमंच, पृ॰ ७२
१०. आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी, राष्ट्रीय साहित्य तथा अन्य निबंध, पृ॰ ८